

23

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-23

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2020 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

चन्दा बेन

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

ईसुरी-23

वर्ष - 2020 अंक - 23 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी

कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्मल राकेश मोहन जोशी

कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. बी.आई. गुरु

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

प्रधान संपादक

प्रो. चन्दा बेन

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : उमेश यादव (सैकड़ों वर्ष प्राचीन कल्प वृक्ष, ओरछा म.प्र.)

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संपादक मण्डल

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

डॉ. हिमांशु कुमार

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. अफरोज बेगम

डॉ. विवेकानन्द उपाध्याय

डॉ. मनीष कुमार

सत्यप्रकाश उपाध्याय

संतोष सोहगोरा

सतीष कुमार

विवेक विसारिया

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...	- प्रो. चन्दा बेन	3
संपादकीय	- डॉ. राजेन्द्र यादव	5

बुन्देलखण्ड : कृति केन्द्रित मूल्यांकन

1. बुन्देली का सांस्कृतिक नाट्य उत्कर्ष (संदर्भ लोकनाथ सिलाकारी का राजा हरदौल बुन्देला)	- प्रो. राजमति दिवाकर	9
2. बुन्देली का रामभक्ति काव्य (संदर्भ भगवानदीन मिश्र का राजेन्द्र विलास महाकाव्य)	- प्रो. सुरेश आचार्य	12
3. बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता (संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएँ)	- प्रो. चन्दा बेन	14
4. बुन्देलखण्ड की समृद्ध परंपरा : प्रबोध महाकाव्य (संदर्भ जगदीश कुमार कुशवाहा)	- प्रो. सरोज गुप्ता	18
5. बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य (संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज)	- प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू	20
6. सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभिः : बुन्देली के ललित निबंध (संदर्भ पद्मश्री कैलाश मड़बैया के निबन्ध)	- डॉ. आशुतोष	24
7. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष (संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल)	- डॉ. अफरोज बेगम	32
8. बुन्देली लोक का काव्यात्मक उछाह : ईसुरी (संदर्भ दया दीक्षित का फाग लोक के ईसुरी)	- डॉ. सुजाता मिश्र	36
9. बुन्देली लोक संस्कृति का सृजनात्मक वैभव (संदर्भ मोतीलाल चौरसिया : बुन्देली लोकगीतों के सांस्कृतिक अध्ययन)	- रतिराम अहिरवार	40

बुन्देलखण्ड : कृतिकार केन्द्रित मूल्यांकन

10. सागर जिले का साहित्यिक वैभव	- वृन्दावन राय 'सरल'	45
11. अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना	- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	49
12. लोकजीवन के चितरे कवि : अवधकिशोर जड़िया	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	59
13. जयन्ति ते सुकृतिनो	- टीकाराम त्रिपाठी	66

बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता

(संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएं)

प्रो. चन्दा बेन*

व्यक्तित्व ही किसी व्यक्ति को सम्पूर्ण मानव बनाता है। बाह्य रूप या आन्तरिक रूप के समन्वय से ही एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है। हरिविष्णु अवस्थी अत्यंत प्रभावी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका बाह्य तथा आन्तरिक व्यक्तित्व सहज, सरल और प्रभावशाली है। प्रथम दृष्टि में ही उनके धीर-गंभीर, पांडित्य पूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव लोगों पर अभिष्ट छाप छोड़ जाता है। उनके साहित्यिक मित्र, समीक्षक एवं शिष्य इस प्रभावी व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते हैं। अवस्थी जी साहित्य, इतिहास, संस्कृति, लोक एवं प्रकृति-दर्शन आदि पर अच्छी पकड़ रखते हैं। साथ ही वे साहित्य सृजन से लेकर आलोचना तक हिन्दी साहित्य में लगभग पाँच-छह दशकों से लगातार सक्रिय रहते हुए अभी भी सृजनरत हैं।

बुन्देली हिन्दी के वरिष्ठ लेखक हरिविष्णु अवस्थी को आज किसी परिचय की दरकार नहीं है। 15 फरवरी, 1933 ई को टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में जन्में अवस्थी जी ने बुन्देली और हिन्दी साहित्य की क्षेत्रीय धरोहर के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

स्कूली शिक्षा में उच्च पद पर रहे अवस्थी जी आज भी लगभग 90 वर्ष की उम्र में भी साहित्यिक लेखन में सक्रिय हैं। देश की विभिन्न प्रतिष्ठित

पत्रिकाओं और सम्पादित पुस्तकों में तीन सौ से अधिक लेख एवं शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। “बुन्देली भाषा, संस्कृति और लोकजीवन की पूरी विरासत आपके लेखकीय जीवन की पहचान है।”

अवस्थी जी एक तरफ बुन्देली लोकजीवन की साहित्यिक समझ रखते हैं तो वहीं दूसरी तरफ वे प्रकृति संरक्षण को लेकर वे एक पर्यावरणविद् की भूमिका भी निभाते हैं। इनकी प्रमुख रचनाओं में ‘रायप्रवीन : एक ऐतिहासिक विश्लेषण’, ‘विषपायी हरदौल’, ‘बुन्देलखण्ड के शिलालेख’, ‘बुन्देली वीरांगना लक्ष्मीबाई’, ‘बुन्देलखण्ड के अमर स्वतंत्रता सेनानी’ और ‘जल प्रबन्धन’ सहित आपकी एक दर्जन से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृति और लोकजीवन के साथ बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक संदर्भ उनके चिंतन के दायरे में लगातार रहे हैं। ओरछा के महाराजा इन्द्रजीत सिंह के राजदरबार की अपूर्व सुन्दरी रायप्रवीन को लेकर अवस्थी जी ने उसके सौन्दर्य और ऐतिहासिक चिंतन को नई दृष्टि दी है। अभी हाल ही में प्रकाशित बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाओं पर केन्द्रित जल प्रबन्धन पुस्तक लोक में काफी चर्चा है। प्रसिद्ध गाँधीवादी चिंतक और पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र ने

*अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 मोबाइल : 9479949601

इस पुस्तक की भूरी-भूरी प्रशंसा की थी। लोकजीवन, इतिहास और साहित्य के समानान्तर बुन्देलखण्ड की प्राचीन जल संरचनाओं पर केन्द्रित हरीविष्णु अवस्थी की 'जल प्रबन्धन' पुस्तक की बुन्देलखण्ड के लोगों के जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण विकसित करती है। बुन्देलखण्ड ऐसा क्षेत्र है, जहाँ पर ग्रीष्म ऋतु में लगभग सभी नदियाँ सूख जाती हैं। एक नर्मदा नदी को छोड़कर शेष नदियाँ बेतवा, धसान, उर, जामनी, बेवस आदि अनेक बुन्देलखण्ड से होकर बहने वाली सभी नदियों की धाराएँ ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती हैं।

देखा जाय तो प्रकृति के संरक्षण को लेकर हिन्दी साहित्य का रचनाकार प्राचीन काल से अपनी चिन्ता जाहिर करता रहा है। इस संदर्भ में केशवदास का यह दोहा और सवैया अति प्रसिद्ध है -

'ललित लहर खग, पुष्प, पशु, सरभि, समीर, तमाल।
करत केलि पंथी प्रगट, जलचर बरनहुँ ताल।।
आपु धरै मल औरनि 'केसव' निर्मल काय करै चहुँ ओरें।
पंथिन के परिताप हरैं हठि जे तरु तूल तनूरुह तोरैं।
देखहु एक सुभाव बड़ी बड़भाग तड़ागनि के पित थोरैं।
ज्यावत जीवन हारिनि को निज बंधन कै जग बंधन छोरैं।'²

- महाकवि केशवदास

इसी प्रकार इसाक अश्क की प्रकृति के जल संरक्षण पर अपनी पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए लिखते हैं कि -

कंचन काया कामिनी, कमल फूल दिन काल।
सूख झुहारे हो गये हरे-भरे सब ताल।
बिन पानी मछली मरी, मरे शंख, शैवाल।
जगह-जगह से फट गये नदियों के रूमाल।।³

- इसाक अश्क

मार्क्सवादी आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा की चिन्ता कुछ ऐसी ही है। शर्मा जी साहित्यकार होने के साथ-साथ प्रकृति और लोक की चिन्ता उनके अंतर्मन में व्याप्त थी। जल संरक्षण को लेकर उनके द्वारा रची गयी कविता बेहद अनूठी है।

उतरते आशाढ़ में एक नदी ने कुएं से पूछा
क्या हाल है आपके यहाँ पानी का ?

खीजकर कुएं ने जबाब दिया

घिरते हैं पर बरसते नहीं

कोई हिसाब नहीं है, बादलों की बेईमानी का।⁴

- डॉ. रामविलास शर्मा

निश्चित रूप से बुन्देलखण्ड में जीवन के लिए पानी का संघर्ष प्राचीन काल से चला आ रहा है। पानी की इस कमी पर जीवन को बचाने के लिए मनुष्य ने लगातार बुन्देलखण्ड में अपनी कोशिश से जल स्रोत निर्मित किये। बुन्देलखण्ड के भू-भाग में पानी के कमी को पूरा करने के लिए प्राचीन काल से लेकर अब तक जो जल प्रबन्धन के कार्य हुए हैं, लगभग उन्हीं का लेखा-जोखा अवस्थी की जल प्रबन्धन पुस्तक में पूरी प्रामाणिकता के साथ दिखाई देता है। इस पुस्तक में ईसा पूर्व की जल संरचनाओं से लेकर मुगल काल तक की तालाबों और बावड़ियों का उल्लेख प्रामाणिक संदर्भ के साथ दिया गया है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र भारत की सबसे प्राचीन विन्ध्य पर्वत शृंखला का वह पठारी भू-भाग है, जिसमें प्राचीन काल से जब प्रबन्धन की व्यवस्था के चिह्न मिलते हैं। जल प्रबन्धन की इसी परम्परा को अवस्थी जी ने अपनी पुस्तक में ऐतिहासिक पुरातात्विक तथ्यों को शामिल कर एक नया आधार दिया है। इस पुस्तक को पढ़कर प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र द्वारा जल संरक्षण पर लिखित पुस्तक 'आज भी खरे हैं तालाब' का स्मरण सहज की हो उठता है।

बुन्देलखण्ड के चित्रकूट में स्थित भरतकूप और उरई, जिला-जालौन में 'रामकुण्ड'- रामायण काल रामायण एवं महाभारतकालीन जलस्रोत माने गये हैं। छतरपुर जिले में स्थित भीमकुण्ड महाभारत कालीन जलस्रोत माना गया है। इसी प्रकार सागर जिले के एरण में स्थित चक्रदार कुएं ईसा पूर्व की अवधि के माने गये हैं। गुप्त एवं प्रतिहार कालीन जल संरचनाओं में

जबलपुर के बहोरीबंद गाँव का तालाब एवं हनुमान तालाब प्रसिद्ध है। इसी क्रम में सिरोनखुर्द की प्राचीन बावड़ी एवं चन्देरी का कीर्तिसागर गुप्त एवं प्रतिहार वंश कालीन जलसंरचनाएँ मानी गयी हैं। बुन्देलखण्ड में 9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच कल्चुरी शासकों का शासन रहा। इस दौरान बुन्देलखण्ड में अनेक तालाब, बावड़ियाँ और कुएँ विशेष रूप से बनवाये गये। कल्चुरी काल में विशेष रूप से जल संरक्षण हेतु पृथक अधिकारी नियुक्त किया गया था, जिसका उल्लेख बोध यश कर्ण के एक दानपत्र से प्राप्त होता है। इस काल में बिलहरी का बड़ा तालाब, धावना का तालाब, लक्ष्मण सरोवर, गंगासागर तालाब आदि निर्माण का उल्लेख मिलता है। पनागढ़, मझौली, पिठौरिया, नोहटा आदि स्थानों पर कल्चुरी कालीन तालाबों का निर्माण कराया गया था। सागर जिले में गढ़पहरा का मोती सागर तालाब, गढौला का तालाब तथा जैसी नगर का तालाब दांगी राजाओं द्वारा बनवाने के प्रमाण मिलते हैं।

बुन्देलखण्ड में प्रामाणिक रूप से जल प्रबन्धन का वृहत विस्तार चन्देलकालीन शासन में किया गया था। 8वीं ई. से 13वीं शताब्दी तक इस भू-भाग में चन्देलों का शासन रहा। इस दौरान चन्देल शासकों ने सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में बड़े पैमाने पर तालाबों का निर्माण कार्य करवाया। अवस्थी जी के जल प्रबन्धन पुस्तक में चन्देलकालीन जल संरचनाओं का प्रामाणिक विवरण दिया गया है। चन्देलों ने अजयगढ़, बांदा, महोबा, कालिन्जर, खजुराहो, ललितपुर, सरकनपुर, अहार, जतारा, बलदेवगढ़, बांसी, बारहा, कबरई, मवई, कुण्डार, बम्हौरी-बराना, बिजौली आदि स्थानों पर तालाबों का निर्माण किया गया था। इन तालाबों से आज भी लोगों की पानी की आवश्यकता पूरी होती है।

हरीविष्णु अवस्थी ने बुन्देला शासन के दौरान बुन्देलखण्ड में जल प्रबन्धन को नया विस्तार दिया है। चन्देलों की सत्ता के उपरान्त अधिकांश बुन्देलखण्ड पर स्वाधीनता प्राप्ति तक बुन्देलों का शासन रहा है।

बुन्देला शासन के दौरान बुन्देलखण्ड में अनेक महत्त्वपूर्ण और जनोपयोगी तालाबों का निर्माण और उल्लेख इस पुस्तक में मिलता है। बुन्देलों द्वारा बुन्देलखण्ड में चन्देलों की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए बड़े पैमाने पर लोक उपयोगी तालाबों का निर्माण कार्य किया गया, जिनमें पृथ्वीपुर के पास महाराजा वीरसिंह जू देव प्रथम (1605 ई-1627 ई.) ने वीरसागर तालाब तथा गढ़कुण्डार में सिन्दुर सागर, नदनवारा में सिन्धुसागर तालाब का निर्माण करावाया था। नदनवारा का सिन्धुसागर तालाब बुन्देला राजा वीरसिंह द्वारा बनवाया गया टीकमगढ़ जिले का सबसे बड़ा तालाब है। इस प्रकार बुन्देलों द्वारा बनाये गये महत्त्वपूर्ण तालाबों में प्रवीण सागर, समन्दर सागर, सुजान सागर, बरुआ सागर, जुगल सागर, धरम सागर, राधा सागर, प्रेम सागर, रानी की वाउड़ी, महेन्द्र सागर, सुधा सागर आदि अनेक महत्त्वपूर्ण हैं। पृथ्वीपुर में राधा सागर नामक तालाब पर लगा हुआ शिलालेख से इसके निर्माता का पता चलता है -

“संवत सै दस अस्त सप्त जुग ऊपर लहिये ।
जेठ मास सित पक्ष चौथ शनिवार जा कहिए ।।
पुश्य नक्षत्र निसा रस जोग धुवनाम बखानौ ।
पंचागहि दिन सोध कियो तब याको छानो ।।
श्री महेन्द्र महिपाल पुरंदर सो अति राजै ।
राधा सागर रचौ तौन जलनिधि सौ गाजै ।।”

बुन्देला राजाओं में महाराजा वीरसिंह, सुजान सिंह, विक्रमाजीत सिंह, धर्मपाल सिंह, तेजसिंह, प्रताप सिंह, वीरसिंह जू देव द्वितीय, दतिया नरेश रामचन्द्र, ओरछा नरेश रामशाह, राजादेवी सिंह चन्देरी, मानसिंह महरौनी, महाराजा छत्रसाल, महाराजा जगतराज, महाराजा हृदयशाह, पन्ना नरेश लोकपाल सिंह, चरखारी के राजा विजय सिंह आदि बुन्देला राजाओं द्वारा झाँसी, जालौन, ललितपुर, महोबा, बांदा, टीकमगढ़, दमोह, पन्ना, सागर, दतिया, छतरपुर आदि उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में विभाजित

बुन्देलखण्ड के लगभग सभी जिलों के नगरों-कस्बों एवं ग्रामों में जल प्रबन्धन के लिए तालाबों का निर्माण कार्य किया गया।

आज आजादी के 72 साल बाद भी बुन्देलखण्ड के वृहत जन समुदाय की जलापूर्ति जीवन एवं कृषि दोनों आवश्यकताओं के लिए बुन्देला और चन्देल कालीन जल संरचनाएं उन्हें जल प्रदान करती हैं। स्वतंत्रता के बाद बुन्देलखण्ड में अनेक महत्वपूर्ण और बड़े बांधों का निर्माण कार्य किया गया, जिनमें बेतवा नदी पर ललितपुर जिले में राजघाट बांध, माताटीला बांध और चिरगाँव के निकट पारीछा बांध तथा धसान नदी पर सुजारा बांध (टीकमगढ़), देहरी बाँध आदि का निर्माण कार्य किया गया।

यह कहना समीचीन होगा कि हरिविष्णु अवस्थी का हिन्दी साहित्य जगत से गहरा सम्बन्ध है, जिसके कारण ही उनके साहित्य में लोक चिंतन एवं प्रकृति संरक्षण को लेकर गहरी संवेदना अभिव्यक्त हुई है। जल संरक्षण के अलावा अवस्थी जी ने बुन्देलखण्ड के शिलालेखों के अर्थ और उसकी महत्ता को रेखांकित किया है। साथ ही बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक पात्रों जैसे रानी लक्ष्मीबाई, लाला हरदोल और रायप्रवीण के चरित्र पर आधारित उनके साहित्य सृजन को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

निष्कर्ष -

हरिविष्णु अवस्थी एक साहित्यकार के साथ-साथ प्रकृति संरक्षण के सजग प्रहरी हैं। उनके साहित्य में लोक और समाज की मंगलकामनाओं को लेकर बड़ी सजगता दिखाई देती है। बुन्देली माटी की

त्याग और वीरता की कहानियों को पुनर्नवा करने के साथ उन्होंने बुन्देलखण्ड की प्राचीन धरोहर को भी अपने लेखन के दायरे में शामिल किया है। एक साहित्यकार और पर्यावरणविद् के साथ वे बुन्देलखण्ड के भू-भाग से परिचित एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने लेखन में बुन्देलखण्ड के इतिहास के साथ बुन्देलखण्ड की मानवीय आवश्यकताओं को भी अपने लेखन में पर्याप्त से अधिक जगह दी है। निश्चित रूप में अवस्थी जी इतिहास, लोक और प्रकृति संरक्षण के सच्चे चिंतक हैं।

सन्दर्भ -

1. ईसुरी-22, संपादक : डॉ. राजेन्द्र यादव, प्रकाशक : बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग, डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, पृ. कवर पेज
2. जल प्रबन्धन : बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएँ, श्री हरिविष्णु अवस्थी, सम्पादक- अशोक मिश्र, प्रकाशक- निदेशक आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462002, प्रकाशन : 2019, पृ. 167
3. वही, पृ. 166
4. वही, पृ. 165
5. जल प्रबन्धन : बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएँ, श्री हरिविष्णु अवस्थी, सम्पादक- अशोक मिश्र, प्रकाशक- निदेशक आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल- 462002, प्रकाशन : 2019, पृ. 92

